प्राकृतिक न्याय

प्राकृतिक– प्रा–प्रायोजित, कृ–कृत्य, ति–तिनका क–करना।
न्याय– न–न्योछावर, या–याद, य–यथार्थ ।

अशोक मानव

अर्थात प्रायोजित कृत्य का तिनका करना। उसका पूर्ण अर्थ होता है जो कार्य प्रकृति में हो चुका है उसका सूक्ष्म रूप बनाना। न्याय का अर्थ है न्योछावर (जो हो चुका है) की याद कराना कि यही यथार्थ है। इसका पूर्ण अर्थ होता है कि प्रकृति में व्यक्ति द्वारा जो भी किया जाता है उसका सूक्ष्म रूप बन जाता है। जिसमें किए गए कार्य का गुण मौजूद रहता है। जब उसके ऊपर प्रकाश पड़ता है तब उसकी अनुभूति होती है। इसी माध्यम से प्रकृति न्याय करती है। न्याय सिर्फ अपराध के लिए नहीं प्रयोग किया जाता है। न्याय का मतलब होता है कि जो भी कार्य प्रकृति में होता है उसका प्रतिफल देना। अच्छे कार्य के लिए पुरस्कृत करना और खराब कार्य के लिए दंडित करना। एहसास ही इन दोनों अवस्था का परिणाम होता है। अच्छा कार्य करने पर आनंद की अनुभूति होती है और खराब कार्य करने पर मन अशांत होता है. शरीर में पीड़ा होती है अपनों द्वारा कष्ट मिलता है. समाज में तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।

प्रकृति में न्याय जल और प्रकाश की रासायनिक क्रिया द्वारा होता है। व्यक्ति जैसा करता है उस गुण की ऊर्जा शरीर से निकल जाती है। जो वायुमंडल में विचरण करती रहती है। यह ऊर्जा हवा के रूप में मौजूद रहती है। किए गए कार्य की एक ऊर्जा जीव प्रकाश के चारों तरफ परिधि बनाती जाती है। प्रकृति में जो भी कार्य शरीर और भाव से होता है उसी प्रकार के गुण से शरीर का निर्माण होता है। इस प्रकार किए गए कार्य की उपस्थिति तीन जगह मौजूद होती है एक हवा के रूप में, दूसरी जीव प्रकाश के चारों तरफ परिधि के रूप में और तीसरी शरीर के अंदर पदार्थ के रूप में।

न्याय प्रणाली में एक भूमिका परछाई की भी होती है। प्रकाश के विपरीत हर व्यक्ति की एक परछाई बनती है। व्यक्ति का स्वरूप जब प्रकाश को रोकता है तो ठीक उसके विपरीत परछाई बन जाती है पर प्रकाश कभी रुकता नहीं है। यह शरीर के अंदर के गुणों को आकृति रूप में बाहर कर देता है जिसे परछाई कहते हैं। यह परछाई आकृति का सूक्ष्म रूप बनकर प्रकृति में मौजूद रहती है। जो न्याय के समय काम आती है। जो गुण जीव प्रकाश के चारों तरफ परिधि बनकर रहता है उसके ऊपर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता तब उसमें रासायनिक परिवर्तन होने के कारण शरीर के अंदर का गुणात्मक पदार्थ सक्रिय हो जाता है। उसी समय जो गुण हवा के रूप में प्रकृति में मौजूद रहता है यह श्वसन क्रिया के माध्यम से शरीर के अंदर आ जाता है। इसे जोड़ने की क्रिया परछाई का सूक्ष्म रूप करता है। जीव प्रकाश अंदर से इन अवस्थाओं को सक्रिय कर देता है। जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक अवस्था में रासायनिक परिवर्तन होने लगता है। जिसकी अनुभूति मानव को होने लगती है। इस अनुभूति के बाद मानव शरीर से एक गंध निकलने लगती है। इस गंध के आकर्षण से उससे संबंधित व्यक्ति, पदार्थ प्रकृति की उससे संबंधित हर अवस्था उस व्यक्ति से जुड़ जाती है और जैसा वह किया होता है वैसा उसके साथ होने लगता है। जिसकी अनुभूति उसे करनी पड़ती है। यही प्राकृतिक न्याय है। इससे कोई नहीं बच सकता है। यही प्रकृति का सत्य है। यह क्रिया वैज्ञानिक रूप से होती है। कानूनी न्याय से व्यक्ति गवाह सबूत के आभाव में बच सकता है। पर प्राकृतिक न्याय में गवाह रूप में परछाई का सूक्ष्म स्वरूप और सबूत के रूप में उसके कार्यों की सुगंध जो हवा के रूप में सदैव मौजूद रहती है। उससे कोई नहीं बच सकता।

प्राकृतिक न्याय प्रणाली में जीवन रहते हुए कुछ न्याय नहीं हो पाता है। इसके पीछे उन लोगों का हाथ होता है जो उस व्यक्ति के गुण के होते हैं। उनकी गुणात्मक ऊर्जा एक दूसरे का सहयोग करने लगती है जिसके कारण सूर्य प्रकाश वहां तक देर से पहुंच पाता है। और न्याय मिलने से पूर्व व्यक्ति शरीर छोड़ जाता है पर उसका किया हुआ कार्य का सूक्ष्म रूप मौजूद रहता है। ऐसा होने पर नए जीवन में उसे न्याय मिलता है। जिस कार्य का न्याय नहीं मिल पाता है उसकी सूक्ष्म ऊर्जा जीव प्रकाश के चारों तरफ परिधि में बनी रह जाती है। जो जीव प्रकाश के शरीर छोड़कर जाते समय साथ चली जाती है। जीव प्रकाश जीव का बीज रूप होता है। जो ब्रह्माण्ड में मौजूद रहता है। जब उसके धारण करने योग्य प्रकृति बन जाती है (प्राकृतिक वातावरण) तब वह पुनः जीवन धारण करता है। जो शरीर छूटी रहती है वह मिट्टी और अन्य पदार्थ में परिवर्तित हो जाती है. पर उसमें व्यक्ति द्वारा किए गए कार्यों का गुण मौजूद रहता है। जो नए जीवन में न्याय दिलाने का कार्य करता है। जब नया जीवन मिलता है तब जीव प्रकाश के चारों तरफ पूर्व जन्म की गुणात्मक परिधि क्रियाशील हो जाती है और पूर्व जन्म की गुणात्मक परछाई हवा रूप में मौजूद पूर्व जन्म की सुगंध को जोड़ देती है। साथ में छूटे हुए शरीर के पदार्थ का गुणात्मक रूप सूर्य प्रकाश के पड़ने के कारण हवा बनकर नए जीवन से जुड़ जाता है। सभी को जोड़ने की क्रिया पूर्व जन्म की परछाई का सूक्ष्म रूप करता है। इस प्रकार पूर्व जन्म का शेष भाग जो पूर्व जन्म में नहीं पूरा हो सका था उसका न्याय इस जन्म में होने लगता है। जो जैसा करता है उसका भोग हर व्यक्ति को अवश्य करना पड़ता है। मैं मानव समाज से आग्रह करता हूं कि शरीर और भाव से कोई अपराध न होने दें। पहले दण्ड कई जन्मों में मिलता है पर अब वह समय आ गया है कि अपराध करते ही उसे दण्ड मिलना शुरु हो जाएगा इसलिए हर व्यक्ति अपराध करने से बचे। अपने अधिकार के साथ–साथ दूसरे के अधिकार की रक्षा करे। सभी के लिए शुभ भाव छोड़कर प्रकृति को सुगंधित कर दे।